

| क्रम सं० | प्रतीक | अध्याय | श्लोक | पृष्ठ | क्रम सं० | प्रतीक | अध्याय | श्लोक | पृष्ठ |
|----------|----------------------------------|--------|-------|-------|----------|---------------------------|--------|-------|-------|
| १०० | ता निराशा निववृत्तुर | ३६ | ३७ | १६३ | १३६ | द्रक्ष्यामः सुमंहत पर्व | ३६ | १२ | १३५ |
| १०१ | ताभिः स्वलंकृतौ प्रीतो | ३८ | ५० | २६३ | १३७ | धनुषो भज्यमानस्य | ३६ | १८ | २८५ |
| १०२ | तावद् ब्रजौकसस्तत्र | ३८ | ८ | २२४ | १३८ | ध्वजवज्राङ्कुशाम्भोजैः | ३५ | ३० | ११२ |
| १०३ | तावाज्ञापयतां भृत्यौ | ३८ | ४८ | २६१ | १३९ | न तस्य कश्चिद् दयितः | ३५ | २२ | १०३ |
| १०४ | तासां मुकुन्दोमधुमञ्जु | ३६ | २४ | १५१ | १४० | नतोस्म्यहं त्वाखिल- | ३७ | १ | १८२ |
| १०५ | तास्तथा तप्यतीर्वीक्ष्य | ३६ | ३५ | १६१ | १४१ | न नन्दसूनुःक्षणभङ्गसौहृदः | ३६ | २२ | १४७ |
| १०६ | तुङ्ग गुल्फारूपा | ३६ | ५० | १७३ | १४२ | नन्दगोपादयो गोपाः | ३६ | ३८ | ३०२ |
| १०७ | तुम्यंनमस्तेस्त्वविषक्त दृष्ट्ये | ३७ | १२ | १६४ | १४३ | न मच्युपैष्यत्यरिबुद्धि- | ३५ | १८ | ६६ |
| १०८ | तेषु पौरा जानपदा | ३६ | ३४ | ३०० | १४४ | नमस्तेद्भुतसिहाय | ३७ | १६ | २०१ |
| १०९ | तौ रथस्थौ बथमिह | ३६ | ४२ | १६७ | १४५ | नमस्ते वासुदेवाय | ३७ | २१ | २०२ |
| ११० | तं तीक्ष्णशृङ्गमुद्वीक्ष्य | ३३ | ५ | ६ | १४६ | नमस्ते वासुदेवाय | ३७ | ३० | २१३ |
| १११ | तं त्रासयन्तं भगवान् | ३४ | ३ | ४३ | १४७ | नमो बुद्धाय शुद्धाय | ३७ | २२ | २०३ |
| ११२ | तं निगृह्याच्युतो दोभ्यां | ३४ | ३३ | ७५ | १४८ | नमो भूगूणां पतये | ३७ | २० | २०२ |
| ११३ | तां सम्प्रविष्टौ वसुदेव | ३८ | २४ | २३७ | १४९ | नमो विज्ञानमात्राय | ३७ | २६ | २१२ |
| ११४ | त्रय्या च विद्यया केचित् | ३६ | ५ | १८७ | १५० | नमः कारणमत्स्याय | ३७ | १७ | १६६ |
| ११५ | त्वमात्मा सर्व भूतानां | ३४ | १२ | ५५ | १५१ | न हि वां विषमा दृष्टिः | ३८ | ४७ | २६० |
| ११६ | त्वं त्वद्य नूनं महतां | ३५ | १४ | ६४ | १५२ | नानालक्षणवेषाभ्यां | ३८ | ४१ | २५३ |
| ११७ | त्वय्यव्ययात्मन पुरुषे | ३७ | १५ | १६७ | १५३ | नाहं भवद्भ्यां रहितः | ३८ | ११ | २२६ |
| ११८ | त्वामीश्वरं स्वश्राय- | ३४ | २४ | ६८ | १५४ | निमज्ज्य तस्मिन् सलिले | ३६ | ४१ | १६६ |
| ११९ | त्वामेवान्ये शिवोक्तेन | ३७ | ८ | १६० | १५५ | निवारयामः समुपेत्य | ३६ | २८ | १५५ |
| १२० | त्वां योगिनो यजन्त्यद्धा | ३७ | ४ | १८६ | १५६ | निवारितो नारदेन | ३३ | १६ | १६ |
| १२१ | ददर्श कृष्णं रामं च | ३५ | २८ | ११० | १५७ | निवेद्य गां चातिथये | ३५ | ३६ | ११६ |
| १२२ | ददर्श तां स्फाटिक- | ३८ | २० | २३४ | १५८ | निशम्य तद्भोजपतिः | ३३ | १८ | १६ |
| १२३ | दध्यक्षतैः सोढ पात्रः | ३८ | ३० | २४४ | १५९ | निसृष्टः किल मे मृत्यु- | ३३ | ३१ | २८ |
| १२४ | दन्ता निपेतु- | ३४ | ७ | ४७ | १६० | नैतं स्वरूप विरू- | ३७ | ३ | १८५ |
| १२५ | दास्यस्म्यहं सुन्दर | ३६ | ३ | २७२ | १६१ | नोत्सहेहं कृपणाधीः | ३७ | २७ | २०७ |
| १२६ | दिशो वितिमिरा राजन् | ३५ | ३३ | ११५ | १६२ | पतन्त्यकालतो गर्माः | ३३ | ४ | ८ |
| १२७ | दिष्टयाते निहतो | ३४ | १५ | ६० | १६३ | पद्भ्यामक्रम्य | ३६ | ७ | २७५ |
| १२८ | दिष्टयाद्य दर्शनं | ३६ | ७ | १३२ | १६४ | पदानि तस्याखिललोकपाल | ३५ | २५ | १०६ |
| १२९ | दीर्घप्रजागरो भीतो | ३८ | २७ | १६३ | १६५ | पप्रच्छ सत्कृतं | ३५ | ४१ | १२१ |
| १३० | दृष्ट्वा मुहुः श्रुतमनु- | ३८ | २८ | २४१ | १६६ | पुनीहि पादरजसा | ३८ | १३ | २२८ |
| १३१ | देव देव जगन्नाथ | ३८ | १६ | २३१ | १६७ | पुरुषैर्बहुभिर्गुप्तं | ३६ | १६ | २८४ |
| १३२ | देवषिरूपसङ्गम्य | ३४ | १० | ५० | १६८ | पृष्ठो भगवता सर्व | ३८ | ८ | १३३ |
| १३३ | देह्यावयोः समुचिता- | ३८ | ३३ | २४७ | १६९ | पृष्ठाथ स्वागतं तस्मै | ३५ | ३८ | ११६ |
| १३४ | देहं भूतामियानर्थो | ३५ | २७ | १०६ | १७० | पौण्ड्रकम्य वधं पश्चाद् | ३४ | २० | ६४ |
| १३५ | द्रक्ष्यामि नूनं सुकपोल- | ३५ | ६ | ८८ | १७१ | प्रतिधातं तु दैवर्षो | ३३ | २० | २० |

| क्रम सं० | प्रतीक | अध्याय | श्लोक | पृष्ठ | क्रम सं० | प्रतीक | अध्याय | श्लोक | पृष्ठ |
|----------|---------------------------|--------|-------|-------|----------|--------------------------|--------|-------|-------|
| १७२ | प्रधान पुरुषावाद्यौ | ३५ | ३२ | ११४ | २०८ | यथा बुद्धो जलं हित्वा | ३७ | २६ | २०६ |
| १७३ | प्रलम्बपीवर भुजं | ३६ | ४८ | १७२ | २०९ | यदचित् ब्रह्मशिवादिभिः | ३५ | ८ | ८६ |
| १७४ | प्रहादनारदवसुप्रमुखैः | ३६ | ५४ | १७५ | २१० | यशोदायाः सुतां कन्यां | ३३ | १७ | १८ |
| १७५ | प्रसन्नो भगवान् कुब्जां | ३६ | ६ | २७४ | २११ | यस्त्वं प्रदर्शयसित- | ३६ | २० | १४४ |
| १७६ | प्रासाद शिखरारूढाः | ३८ | २६ | २४३ | २१२ | यस्याखिलामीवहभिः | ३५ | १२ | ६२ |
| १७७ | प्राह नः मारुतं जन्म | ३८ | ४५ | २५७ | २१३ | यस्यानुरागललित- | ३६ | २६ | १५६ |
| १७८ | बलदर्पहाहं दुष्टानां | ३३ | ८ | ११ | २१४ | याताशु बालिशा | ३८ | ३६ | २५० |
| १७९ | बलं च कस प्रहितं | ३६ | २१ | २८७ | २१५ | यानिचान्यानिवीर्याणि | ३४ | २१ | ६४ |
| १८० | बृहत्कटितटश्रोणि- | ३६ | ४६ | १७३ | २१६ | यानि यानीह रूपाणि | ३७ | १६ | १६६ |
| १८१ | भगवद्दर्शनाद्वा- | ३५ | ३५ | ११६ | २१७ | यावदालक्ष्यते केतुर- | ३६ | ३६ | १६२ |
| १८२ | भगवान् जीवलोकोऽयं | ३७ | २३ | २०४ | २१८ | यास्यामः श्वोमधुपुरी | ३६ | १२ | १३५ |
| १८३ | भगवानपि गोविन्दो | ३४ | २६ | ७० | २१९ | योवधीत् स्वस्वसुस्तोकान् | ३५ | ४२ | १२१ |
| १८४ | भगवानपि सम्प्राप्तो | ३६ | ३८ | १६४ | २२० | योहः क्षये व्रज- | ३६ | ३० | २५७ |
| १८५ | भगवांस्तमभिप्रेत्य | ३५ | ३६ | ११७ | २२१ | रजकं कञ्चिदायान्तं | ३८ | ३२ | २४६ |
| १८६ | भवान् प्रविशतामग्रं | ३८ | १० | २२५ | २२२ | रथात् तूर्णमवप्लुत्य | ३५ | ३४ | ११५ |
| १८७ | भवन्तौ किल विश्वस्य | ३६ | ४६ | २५८ | २२३ | रम्भमाणः खरतरं | ३३ | २ | ७ |
| १८८ | भ्राजमानं पद्मकरं | ३६ | ५२ | १७४ | २२४ | राजन् मनीषितं सम्यक् | ३३ | ३८ | ३३ |
| १८९ | भूयस्तत्रापि सोद्राक्षीत् | ३६ | ४४ | १६८ | २२५ | रामकृष्णौ ततो मह्यं | ३३ | २३ | २२ |
| १९० | भूस्तोयमग्निः पवनः | ३७ | २ | १८६ | २२६ | रूपपेशलमाधुर्य- | ३६ | ४ | २७३ |
| १९१ | भो भो दनपते मह्यं | ३३ | २८ | २६ | २२७ | रोमाणि वक्षोपधयः | ३७ | १४ | १६७ |
| १९२ | भो भो निशम्यतमेतद् | ३३ | २२ | २२ | २२८ | लब्धाङ्गसङ्गं प्रणतं | ३५ | २१ | १०२ |
| १९३ | मञ्चाः क्रियन्तां विविधाः | ३३ | २४ | २३ | २२९ | वसित्वात्मप्रिये वस्त्रे | ३८ | ३६ | २५२ |
| २९४ | मनोरथान् करोत्युच्चैः | ३३ | ३६ | ३५ | २३० | वाद्यमानेषु तूर्येषु | ३६ | ३६ | ३०१ |
| १९५ | मनासि तासामरविन्द- | ३८ | २७ | २३६ | २३१ | विलोक्य सुभृशं | ३६ | ५६ | १७७ |
| १९६ | ममाद्यामङ्गलं नष्टं | ३५ | ६ | ८३ | २३२ | विशाल नेत्रो विकटास्य- | ३४ | २ | ४२ |
| १९७ | ममैतद् दुर्लभं मन्ये | ३५ | ४ | ८२ | २३३ | विशुद्धविज्ञानधनं | ३४ | २३ | ६६ |
| १९८ | मयपुत्रो महामायो | ३४ | २६ | ७२ | २३४ | विसृज्य माध्यावाण्या तां | ३६ | १३ | २६६ |
| १९९ | महामात्रत्वया भद्र | २३ | २५ | २४ | २३५ | व्युष्टायां निशि कौरव्य | ३८ | ३२ | २६६ |
| २०० | मा भैष्टेति गिराश्वास्य | ३३ | ७ | १० | २३६ | शम्बरो नरको बाणो | ३३ | ३३ | ३० |
| २०१ | मार्गे ग्रामजना राजन् | ३२ | ७ | २२३ | २३७ | श्रिया पुष्टया गिरा | ३६ | ५५ | १७६ |
| २०२ | मैतद्विधस्याकरुणस्य | ३६ | २६ | १५३ | २३८ | श्रुत्वा क्रूरवचः कृष्णो | ३६ | १० | १३४ |
| २०३ | मैव मेवाधमस्यापि | ३५ | ५ | ८३ | २३९ | सख्युर से भुजा भोगं | ३३ | ६ | १२ |
| २०४ | य ईक्षिताहं रहितो | ३५ | ११ | ६० | २४० | सङ्कर्षणश्च प्रणत- | ३५ | ३७ | ११८ |
| २०५ | यत्राद्भुतानि सर्वाणि | ३८ | ५ | २२१ | २४१ | स चावतीर्णः किल | ३५ | १३ | ६३ |
| २०६ | यत्सन्देशो यदर्थं वा | ३६ | ६ | १३३ | २४२ | सत्त्वं रजस्तम इति | ३७ | ११ | १६४ |
| २०७ | यथाद्रिप्रभवा नद्यः | ३७ | १० | १६३ | २४३ | सत्त्वं भूधर भूतानां | ३४ | १४ | ५६ |

| क्रम सं० | प्रतीक | अध्याय | श्लोक | पृष्ठ | क्रम सं० | प्रतीक | अध्याय | श्लोक | पृष्ठ |
|----------|-------------------------|--------|-------|-------|----------|--------------------------------|--------|-------|-------|
| २४४ | स तं निशम्याभिमुखौ | ३४ | ४ | ४४ | २५७ | सुमहाहंमणित्रात- | ३६ | ५१ | १७४ |
| २४५ | स निजरूपमास्थाय | ३४ | ३२ | ७५ | २५८ | सुहृत्तमं ज्ञातिमनन्य | ३५ | २० | १०१ |
| २४६ | समेधमानेन सकृष्णा | ३४ | ८ | ४८ | २५९ | सोपि चान्तर्हितं दीक्ष्य | ३८ | २ | २१८ |
| २४७ | समर्हणं यत्र निधाय | ३४ | १७ | ६७ | २६० | सोपि वब्रेचलां भक्ति | ३८ | ५१ | २६४ |
| २४८ | स याचितो भगवता | ३८ | ३४ | २४८ | २६१ | सोपि विद्धो भगवता | ३३ | १२ | १४ |
| २४९ | स लब्धसंज्ञः | ३४ | ६ | ४६ | २६२ | सोह तवाङ्घ्रयुपगतोऽस्म्यसतां३७ | २८ | २० | २०९ |
| २५० | सहस्रशिदसं देवं | ३६ | ४५ | १६८ | २६३ | सौवर्णशृङ्गाटक- | ३८ | २१ | २३५ |
| २५१ | सर्व एव यजन्ति त्वां | ३७ | ६ | १६१ | २६४ | स्तुवतस्तस्य भगवान् | ३८ | १ | २१७ |
| २५२ | सा तदजुं समानाङ्गी | ३८ | ८ | २७६ | २६५ | स्त्रीणामेव रुदन्तीनां- | ३६ | ३२ | १५६ |
| २५३ | सायन्तनाशनं कृत्वा | ३६ | ३ | १२८ | २६६ | स्मरन्त्यश्चापराः | ३६ | १६ | १३६ |
| २५४ | सुखोपविष्टः पर्यङ्के | ३६ | १ | १२६ | २६७ | स्यमन्तकस्य च मणो | ३४ | १६ | ६३ |
| २५५ | सुखं प्रभातारजनियमाशिषः | ३६ | २३ | १५० | २६८ | स्वप्ने प्रेतपरिष्वङ्ग | ३६ | ३० | २६७ |
| २५६ | सुनन्दनन्द प्रमुखः | ३६ | ५३ | १७५ | | | | | |

महात्म्य एवं आश्रय के पद

राग देवगंधार

मेरे जिय ऐसी आय बनी ।

छांड गोपाल औरें, जो सुमरों, तो लाजे जननी ॥

विष को मेरु^१ कहा लै कीजे, अमृत एक कनी^२ ।

मन क्रम वचन और नहीं चितवों, जब कब श्याम धनी ॥

कहा लै करों काच^३ को संग्रह छांड अमोल मनी^४ ।

सूरदास भगवन्त भजन बिनु, तजी जात अपनी ॥

राग सोरठ

श्रीवल्लभः ! कृपा कटाक्ष निहारो ।

जीव कृततन दोष न देखो, अपनो विरद संहारो ॥१॥

जो कुछ बने सोई विमुखता, कहा कहै जीव बिचारो ।

रसिकदास जन जैसो तैसो, आखिर दास तिहारो ॥२॥

राग विहाग

भरोसो दृढ इन चरनन केरो ।

श्रीवल्लभ नख चन्द्र छटा बिन, सब जग माहि अंधेरो ॥१॥

साधन और नाहि या कलि में, जासों होय निवेरो ।

सूर कहा कहे दुविध आंधरो, बिना मोल को चेरो ॥२॥

